काञ्यमुधा (2. काञ्य 2, b. + मुधा) f. Titel eines Commentars zu einem Werke über Kunstgedichte Verz. d. B. H. No. 823.

काट्यायन patron. von काट्य gana नडारि zu P. 4,1,99.

কাত্যান্তর (2. কাত্য 2, b. + মৃত্রর) n. Titel eines Werkes von Sûrja Verz. d. B. H. No. 868.

काम, कैशित (ep. auch act.; s. unter प्र); चकाश oder काशानास Vop. 8,80.118. sichtbar sein, erscheinen; glänzen, leuchten, einen lieblichen Anblick gewähren Duatup. 16,46. तमसा चैव घोरेण समद्भतेन सर्वशः। प्र-च्कादितं जनस्थानं न चकाशे समस्ततः ॥ R. 3,29,8. नैव भूमिर्न च दिशः प्र-दिशो वा चक्राशिरे MBn. 3,12789. ते तन्निया रङ्गगताः समेता जिगीपमा-णा इपरात्मतां ताम् । चकाशिरे पर्वतरात्रकन्याम्मां यद्या देवगणाः समेताः॥ 1,7008. क्रिरिव युगरीवैर्दिभिरंशैस्तरीयैः पतिरवनिपतीनां तैद्यकाशे च-त्भिः Ragu. 10,87. तन्मिव्नं चकासे (sic) । मेरेाक्रपालेघिव वर्तमानमन्या-उन्यसंसक्तमकृष्त्रियामम् ॥ ७,२१. भृशं जीमृतवर्णानि वदनानि चकाशिरे R. 3,55,25. पालपुष्पविक्तीनाञ्च तर्वा न चकाशिरे 29,12. तपा डक्तित्रा मृत-रं। सिवत्री स्फ्रत्प्रभामएडलया चकाशे Комаказ. 1,24. Внатт. 2,25. का-शित glänzend, leuchtend: प्रकृपीत्काशितैर्मृवै: (oder ist etwa प्रकृपीत्का-सित: zu lesen?) R. 6,26,48. चकाशेत MBu. 3,438 falsche Lesart für प्र-काशते; vgl. 4,755. Nach Duarup. 26,53 auch काण, काँश्यते. — intens. चैंकिशीति, चाकश्यैते 1) hell leuchten: मङ्गाराम्याकश्यत इव ÇAT. BR. 2, 3, 2, 13. Katj. Ça. 4, 15, 21. — 2) hell sehen, überblicken: चाक्यमाना इव न जानत्यय परैवोपजित्रत्यय जानति Çat. Br. 11,8,3,10. म्रहं भ्वनं चाकशीमि P. 7,3,87, Vartt. 1, Sch. - Vgl. चकास्.

- म्रुनु s. म्रनूकाश.
- श्रमि intens. 1) beleuchten, bestrahlen: तया नस्तन्त्रा शत्तेमयाभि ची-कशीव्हि VS. 16,2. — 2) beschauen, erschauen: धृतस्य धारी श्रमि चीत्र-शीमि RV. 4,58,5.9. श्रमूयव्यन्यंचाकशम् 10,135,2. श्रनेश्रवन्यो श्रमि चीत्र-शीति 1,164,20. ÇAT. BR. 14,7,1,12.
- म्रव sichtbar sein, zu Tage liegen: उभयता माँसे: संक्र्झ नावकाशत ÇAT. BR. 8,7,4,20. Vgl. म्रवकाश. caus. act. hinblicken lassen, heissen: पत्नीमवकाशिपव्यन्भवति ÇAT. BR. 1,3,4,20. उपामुमेव प्रवममवकाशिपति 4,5,6,2. 1.5. Kitz. ÇR. 9,7,16. intens. partic. praes. 1) strahlend: स्रिति सविता स्विद्विस्पृष्ठे ऽव्चाकेशत् AV. 13,4,1. 2) erblickend: (इ. हि) धेना इन्द्रावचाकेशत् RV. 8,32,22. 9,32,4. 10,43,6. मृत्ति विद्या पतनिवधी स्पावचाकेशत् AV. 13,4,1.
- म्रा erschauen, erkennen: स संप्रत्युरः पुरूषमात्राश्य Çлт. Вв. 7, 4, 1, 43. Vgl. मात्राश.
- उद् aufleuchten, erglänzen: स उच्चकाशे घवलाद्रा द्रा (Muschel) प्रयुक्तक्रमस्याधरशोणशोणिमा। दाध्मायमानः कर्कंत्रसंपुटे यथाब्जयराटे कल्क्स उत्स्वनः ॥ Buse. P. 1,11,2. Vgl. उत्काशन.
 - नि s. नीकाश.
- संनि caus. enthillen, offenbaren: न संनिकाश रेडर्मम् MBH. 14,1283.
- निम् elucere West.: तं घृगालमूर्धचर्णं निमीलितनयनं द्सनिष्का-शितं दृष्ट्वा मृत इति मला u. s. w. Hit. 91, 16. Nach unserer Meinung ist निष्काशित als caus. und द्सनिष्काशित als eine auch sonst vorkommende Umstellung zu fassen. Das caus. würde die Bed. sichtbar machen, zeigen haben. Häußig wird das caus. von कम् nach निम् mit श geschrie-

ben und auf diese Weise mit काञ् verwechselt: मृक्ति:काशित: Рамкат. 127, 16. Andere Beispiele wird man unter कस् finden.

— A sichtbar werden, sich zeigen, zum Vorschein kommen, erscheinen; glänzen, leuchten; klar —, offenbar werden: एप सर्वेष भृतेय गेहा अत्मा न प्रकाशते । दृश्यते त्रय्यया वृद्धा सून्त्मया सून्त्मदृर्शिभिः ॥ Катнор. 3, 12. वि-श्वामित्राष्ट्रमा रूप्य एप चात्र प्रकाशते MBH. 3,9990.10406. म्रा योजनाहा भूषो वा सत्यनामा (सा प्री) प्रकाशते R. 1,6,25. कस्पेदं मेघसंकाशं वनं घीरं प्रकाशते 26, 13. 34,8. 2,93,7. मुर्ह्स्तादेव दृदशे मुर्ह्स्ताव प्रकाशते 3,50,6. च्याकुलाञ्च दिशः सर्वा न च किंचित्प्रकाशते Viçv. 15, 12. ततः (किमवतः) प्रथमं प्रकाशते (गङ्गा) P. 4,3,83, Sch. कर्म यत्क्रियते प्राक्तं प्रात्तं न प्र-काशते Bake. P. 4,29,59. नतत्राणि गताचीं पि प्रकाश गततेवसः। विशा-खाद्य संघूमाद्य नभित प्रचकाशिरे ॥ R. 2,41,11. तावन्योऽन्यं समाङ्मिष्य प्रकर्पत्ती परस्परम् । उभावपि प्रकाशेते (dafür fälschlich चकाशेते 3,438) प्रवृद्धा वृपभाविव ॥ мвн. 4,755. ताव्भा स्म प्रकाशेते पृथ्पिताविव किं-श्की R. 6,20,10. 2,77,25. 3,5,8. वाणवृष्टिभिराकीर्णः सङ्खांश्रुर्दिवाक-रः। न प्राकाशत ३३,१२. (रयाः) उच्चैः सत्तः प्रकाशत्ते व्वलत्तो ऽग्निशिखा इव MBn. 1,3676. 13,5963. 14,507. निरुभ इव घर्नाप्र्यदा दृष्टिः प्रकाशते Suça. 2,344,7. सिनःश्वास इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते R. 3,22,13. ये न र-त्ति विषयं पराधीना नराधिषाः। ते मद्रा न प्रकाशत्ते गिर्यः सागरे यद्या।। 37,6. तया (उपनिषदा) प्रयुक्तया सम्यग्जगत्सर्वे प्रकाशते MBH. 3,1466. म्र-पि चेक् श्रिया कीनः कृतविद्यः प्रकाशते 13750. विद्या प्रकाशते Suga. 1, 7,14. तस्यैते कविता खार्याः प्रकाशत्ते Çveriçv. Up. 6,23. act.: भूप रूव तु ते वीर्यं प्रकाशेत् MBu. 3, 10400. तता ह्र्रात्प्रकाशतं पाएउर्र मेहसंनिभम्। द्रश्रुस्ते 10911. प्रभावातेषाम्पीणां वीद्य पाएउवाः । प्रकाशता दिशः सर्वा विस्मवं पर्मं ययः ॥ 13, 1773. मग्रचन्द्रमिव व्योम न प्रकाशित मेरिनी B. 4,16,3. - caus. act. sichtbar machen, erscheinen lassen, zeigen, an den Tag legen; erleuchten, erhellen; enthüllen, bekanntmachen, mittheilen, verkunden, offenbaren: द्वारिणं तापसा ऊच् राजानं च प्रकाशय MBn. 1, 4906. Катная. 15, 102. म्रवसरा उपमात्मान प्रकाशियतम् Сак. 12, 11. रङ्ग-स्य दर्शियता निवर्तते नर्तकी यदा नत्यात । प्रत्यस्य तद्यात्मानं प्रकाश्य निवर्तते प्रकृतिः ॥ ১৯৯६। अ. ५७. व्यवसाया क्ति ते वीर् कर्म चैव प्रका-शितम् R. 4,42,14. 3,39,37. 5,51,9. सर्वा दिश ऊर्धमध्य तिर्यक्प्रकाश-यन्त्राज्ञते यहनद्वान् ÇvetAçv. Up. 5,4. Praçnop. 1,6. र विर्यद्या लोकमिमं प्र-काशयन् MBn. 4,232. 3,11904. त्वया (सूर्येषा) संधार्यते लोकस्त्वया लोकः प्रकाश्यते १६८. पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुतिन्योतस्ताः प्रकाशिताः १,८६. मार. १,१६३. Vio. 101. यया प्रकाशयत्येकः कृतस्त्रं लोकिममं रिवः। तेत्रं तेत्री तथा क्-त्स्रं प्रकाशयति भारत ॥ Внас. 13, 33. 5, 16. МВн. 14, 507. Såйкнуак. 36. म्रपव्हत्य तमः संततमर्थानिखलान्प्रकाशयत् Sin. D. 1, 7. कदाचित्कृपितं मित्रं सर्वदेषं प्रकाशयेत् Kin. 20. MBu. 3, 11209. Hrr. 1,122. काशिपति-प्रकाशित Suga. 1,6,5. 12,6. Vet. 3,9. Bhatt. 11,31. Kathas. 2,60.61. 4, 88. प्रकाशित = दर्शित u. s. w. H. 1478. med.: कत्येव देवा: प्रजा विधा-र्यते कतर एतत्प्रकाशयत्ते (:ur Erscheinung bringen) Pasçnop. 2, 1. ता-म्पर्गीतिं प्रकाशयते (für Etwas erklären) महाकवप: Çaur. (Ba.) 8. — intens. bestrahlen und überblicken: भ्वनानि प्रचात्रशह्तानि देव: संविता-भि र्रत्तते हु v. 4,53,4. — vgl. म्रप्रचङ्क्षा, प्रकाशः

— म्रभिप्र sichtbar werden, sich zeigen: ट्यूक्षेषु कपिमुख्यानां प्रकाशो ऽभिप्रकाशते । देवानामिव तैन्यानां संयामे तारकामये ॥ R. 5,73,60. देव-याना ऽस्य पन्याश्च चन्पाभिप्रकाशते (seinem Auge) MBH. 3, 11006 (p. 569).